सोलानेसियस सब्जियों के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन
कृषि कुंभ (सितंबर, 2023), खण्ड 03 भाग 04, पृष्ठ संख्या 117–123

सोलानेसियस सब्जियों के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

डॉ0 दुर्गा प्रसाद[1] एवं डॉ0 आर0पी0 सिंह[2]
[1]सह–प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान, कृषि महाविद्यालय, बायतु, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[2]वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण, बिहार, भारत।
Email Id: rpspath870@gmail.com

सब्जियां हमारे जीवन में बहुत आवश्यक हैं, क्योंकि यह हमें महत्वपूर्ण विटामिन, खनिज, एंटीऑक्सिडेंट और फाइटोकेमिकल्स प्रदान करती है। भारत में कई तरह की सब्जियां उगाई जाती हैं, और अच्छे उत्पादन के लिए इन्हें हानिकारक कीट से सुरक्षित रखना होता है। सब्जियां हानिकारक कीटों से होने वाले क्षति से कभी भी प्रभावित हो सकती हैं। सब्जियों में होने वाले कीटों की क्षति से पौधों की उत्पादन क्षमता बेहद प्रभावित होती है। अगर सब्जियों के पौधों में होने वाले कीट प्रकोप को जल्द पहचान लिया जाय और उनके लक्षणों का निवारण सही समय पर कर लिया जाय तो, तो ऐसे में फसल को खराब होने से बचाया जा सकता है। सब्जियों के पौधों में बहुत सारे हानिकारक कीट प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुचातें हैं। इस लेख में सोलानेसियस सब्जियों जैसे टमाटर, बैंगन, आलू और मिर्च के कीट और उनका समेकित प्रबंधन करने के उपाय के बारे में विस्तृत जानकारी दिया गया है जो किसान और सब्जी उत्पादकों को सब्जी फसलों को कीट से खराब होने से बचाने में मदद करेगा।

(अ) टमाटर फसल के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

टमाटर एक अत्यन्त लोकप्रिय फसल है जिसमें कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण तथा एंटीआक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। कीटों के प्रकोप से टमाटर की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। टमाटर की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों का प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

1. फल बेधक सूडी:– यह सूडी फलों के अंदर घुसकर गूदे को खाती है, खाते समय आधा हिस्सा फल के अंदर तथा आधा हिस्सा बहर रहता है। जिस फल पर सुराग कर देती है जिसमे फफूंद का प्रकोप आसानी से हो जाता है और फल पूर्ण रूप से सड़ जाता है।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से सूडी एवं कृमिकोष तेज धुप से नष्ट हो जाते हैं।
- कीटों को आकर्षित करने वाली फसल जैसे गेंदाय टमाटर की प्रत्येक 16 लाईन के बाद 2 लाईन लगाना

चाहिए। ध्यान रहे कि गेंदा की 40 दिन पुरानी पौध हो, तथा टमाटर की पौध 25 दिन की होनी चाहिए।

- कीटों के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप (15–20 ट्रैप प्रति हेक्टर) प्रयोग करना चाहिए, तथा निगरानी हेतु 5–8 ट्रैप प्रति हेक्टर प्रयोग करें।
- ट्राईकोकार्ड (ट्राईकोग्रामा ब्रेसिलेंस) 4–5 बार प्रयोग करें (फूल आने के समय 10 दिनों के अन्तराल पर लगायें, 250000 ग्रसित अन्डे प्रति हेक्टर यानि एक बार में 50000 ग्रसित अन्डे प्रति हेक्टर)।
- एच.एन.पी.वी. 250 एल.ई. 10 ग्राम गुड़ प्रति लीटर पानी़साबुन पानी 5 मिली प्रति ली. टीनोंपाल 1 ग्राम प्रति ली. कि दर से शाम के समय प्रयोग करना चाहिए।
- बैसिलस थ्यूरीजेंसिस 2 ग्राम प्रति लीटर पानी कि दर से 10 दिनों के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करके रोकथाम की जा सकती है।
- यदि नियंत्रण ना हो रहा हो तो एमामेक्टिन बेंजोएट 5 एस.जी. रसायन 1 ग्राम प्रति 2–3 ली.पानी या फ्लूबेन्दियामाइड 20 डब्ल्यू जी 5 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी की दर से प्रयोग करना चाहिए।

2. सफेद मक्खीः– इसके प्रकोप से पत्तियां नीचे की ओर, कभी–कभी ऊपर की ओर मुड़ी हुई ऐठन लिए हुए होती हैं। पौधों में दो गांठो के बीच का अंतर काफी कम हो जाता है तथा पौधा झाड़ीनुमा दिखाई देता है। प्रभावित पौधों में फूल व् फल नहीं बनते हैं। यह गुर्च रोग के नाम से जाना जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- बीज बोने से पूर्व इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू एस की 3 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से शोधन कार्य करना चाहिए।
- पौधशाला को नायलन की जाली से ढकना चाहिए।
- रोपाई के समय कार्बोफ्युरान 65 ग्राम प्रति लीटर गुन–गुने पानी में घोलकर ठण्डा होने के बाद 2–3 घन्टे जड़ शोधन करने के बाद रोपाई करना चाहिये।
- खेत से रोग ग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट कर देना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 3–4 मिली प्रति 10 लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

3. माहूँ कीटः– यह कीट मुलायम शरीर वाला नाशपाती के आकर का पेट फैला हुआ होता है। एक पुच्छ व् एक जोड़ी गहरे शंक्वाकार पंखों वाला या पंखहीन कीट है। आमतौर पर पंखहीन रूप में ही होता है। यह कीट झुण्ड में रहकर नुकसान पहुँचाता है। यह कीट शःद्नुमा पदार्थ छोड़ता है जिसपर फफूँद उगती है जिससे पौधे की दैहिक क्रिया प्रभावित हो जाती है तथा उत्पादन प्रभावित होता है। यह कीट मोजेक विषाणु का वाहक भी है।

समेकित प्रबन्धनः

- रोगी पौधों को उखाडकर नष्ट कर देना चाहिए।
- पौधशाला में बुआई करते समय मिटटी में कार्बोफ्यूरान 5 ग्राम प्रति वर्ग मी. की दर से मिलाएं।

- पौधशाला को मच्छरदानी युक्त जाली से ढकना चाहिए।
- टमाटर के खेत के चारों तरफ मक्का, ज्वार, बाजरा लगाना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर कानफिडोर 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

(ब) बैगन की फसल के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में अनेक समस्याएँ विद्यमान हैं जिसमें प्रमुख समस्या कीटों की है जिससे उत्पादकता सामान्यत: 25–30 प्रतिशत तक घट जाती है। कीटों का प्रकोप अधिक होने पर नुकसान का प्रतिशत बढ़ जाता है साथ ही साथ सब्जियों की गुणवत्ता में कमी आती ळें यदि इस नुकसान को एक सीमा तक रोक दिया जाय तो हमारी सब्जियों की आवश्यकता को काफी हद तक पूरा किया जा सकता है। सब्जिओं में बैगन एक अत्यन्त लोकप्रिय फसल है जिसमें कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, खनिज लवण तथा एंटीआक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। कीटों के प्रकोप से बैगन की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। बैगन की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों का प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

1. बैगन का प्ररोह एवं फल बेधक कीट: यह बैगन का प्रमुख एवं धातक कीट है। वयस्क कीट एक प्रकार की तितली होती है जिसकी लम्बाई 10 मिमी. होती है। जिन पर चौड़े, भूरे धब्बे पाए जाते हैं। इसकी सूडी वाली अवस्था ही फसल को हानि पहुंचती है। सूडी चिकनी गुलाबी रंग की होती है, वयस्क सूडी की लम्बाई 15–18 मिमी. होती है। इसका प्रकोप आमतौर पर रोपाई के एक सप्ताह बाद शुरू हो जाता है।

समेकित प्रबन्धन:

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीट अवरोधी प्रजाति जैसे– पूसा पर्पल राउंड, अर्का कुसुमाकर, डोली–5, पूसा पर्पल लॉन्ग, पन्त सम्राट, एस. एम. 67 एवं 68 आदि को लगाना चाहिए।
- प्रभावित तने व फलों को एकत्र कर (सप्ताहिक) नष्ट कर देना चाहिए।
- खेतों में टी के आकार की डंडियाँ लगायें।
- 10 मी0 के अंतराल पर फेरोमोन ट्रैप (100 प्रति हे.) लगाना चाहिए।
- जैविक कीटनाशी बी.टी. पावडर 1 किग्रा प्रति हे. 500 ली. पानी की दर से 2–3 छिड़काव कर नियंत्रण किया जा सकता है।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे– कार्बोसल्फान 25 प्रतिशत ई.सी. 2 मिली प्रति ली. पानी या कार्टप

हाईडरोक्लोराइड 50 प्रतिशत एस.पी. 1 ग्राम प्रति ली. पानी या फ्लूबेन्दियामाइड 20 प्रतिशत डब्ल्यू0 जी0 1 ग्राम प्रति 2 ली पानी या थायोडीकार्ब 75 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 1 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

2. बैगन का हड्डा भृंग कीटः वयस्क कीट पीलापन लिए भूरे या गहरे भूरे रंग का होता है जिनपर काले रंग की 7–14 बिंदियाँ पायी जाती हैं। ग्रब(शिशु) पीले रंग का, प्रौढ़ कीट 8–9 मिमी लम्बा, 5.5 मिमी चौड़ा होता है। मादा कीट समूह में पीले रंग के अंडे (सिगार के आकार) देती है। वयस्क एवं शिशु पत्तियों के हरे व मुलायम भाग को खुरचकर खा जाते हैं जिससे पत्तियों का ढांचा ही शेष रह जाता है जो बाद में सूखकर गिर जाता है। जीवन चक्र 20–50 दिन, 7 पीढ़ी प्रति वर्ष।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीटों के अंडे समूह, प्रौढ़ व शिशु को एकत्रकर नष्ट कर देना चाहिए।
- खेतों में टी के आकार की डंडियाँ लगायें।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस. के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- नीम तेल 1 ली0 60 ग्राम साबुन पावडर को आधा ली पानी में घोल लें, उसके बाद 20 ली0 पानी में घोले, 400 ग्राम लहसुन के पेस्ट को घोलें, उसके बाद छिड़काव करें।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे– कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम प्रति ली. पानी या कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत डब्ल्यू0 पी0 की 2 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए अथवा मैलाथियान या कार्बरिल धूल की 20–25 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर के हिसाब से भुरकाव करना चाहिए।

3. बैगन का तना बेधक कीटः इस कीट का प्रकोप मार्च से अक्टूबर तक अधिक होता है। इस कीट की सूडी नवम्बर से मार्च तक पुराने पौधों के तने में छिपी रहती है। मार्च से अक्टूबर तक मादा कोमल पत्तियों, डंठलों एवं शाखाओं पर अंडे देती है। अण्डों से सूडी निकलकर तने में छेदकर प्रवेश कर जाती है और लम्बाई में सुरंग बनाकर पौधों की खाद्य आपूर्ति को बाधित करती है जिसके कारण पौधा पीला होकर धीरे–धीरे सूख जाता है। इसका जीवन चक्र 35–76 दिनों में पूरा हो जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- ग्रीष्म कालीन जुताई करनी चाहिए। 2–3 वर्ष का फसल चक्र अपनाना चाहिए।
- कीटों के अंडे समूह, प्रौढ़ व शिशु को एकत्रकर नष्ट कर देना चाहिए।

- प्रकाश प्रपंच दर 1 प्रति हे0 प्रयोग कर कीटों को नष्ट कर देना चाहिए।
- काट–छांट (रैटून क्रॉपिंग) वाली फसल लेने से बचें।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस. के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- उपर्युक्त क्रियाओ को करने से यदि नियंत्रण न हो पा रहा हो तो रासायनिक कीटनाशी जैसे– कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम प्रति ली0 पानी या कार्बरिल 50 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम़ घुलनशील सल्फर 80 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए अथवा क्यूनलफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.5 ली0 नीम तेल 1 ली0 600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

4. बैगन का हरा फुदका (जैसिड) कीटः इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ बैगन की प्रारम्भिक अवस्था में पत्तियों का रस चूस कर हानि पहुंचाते है। वयस्क कीट हरे रंग का 2 मिमी. लम्बा तथा पंख पर दो काले धब्बे पाए जाते हैं। शिशु सफेद रंग का होता है। ये कीट बैगन की निचली सतह से रस चूसते हैं साथ–साथ उसमें अपना जहरीला लार छोड़ते हैं जिससे प्रभावित भाग पीला होकर सूख जाता है। पत्तियाँ सूखकर गिरने जगती हैं जिससे पैदावार प्रभावित होती है।

समेकित प्रबन्धनः

- कीट अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे– वैशाली, मंजरी गोटा, मुक्ता केसी, राउंड ग्रीन, कल्यानिपुर टी–3 आदि को उगाना चाहिए ।बीज बोने से पहले बीज शोधन इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्ल्यू एस की 2.5 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से करना चाहिए।
- ट्रैप फसल के रूप में भिन्डी की फसल को बार्डर पर उगाना चाहिए।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के. ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे0 500–750 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- कीटनाशी रसायनों जैसे– इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 3 मिली0 प्रति10 ली0 पानी या इथोफेनप्राक्स 10 प्रतिशत ई0सी0 1.25 मिली0 प्रति ली0 पानी या बूफ्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0पी0 1 मिली0 प्रति ली0 पानी या लैम्डासाईहैलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 1 मिली0 प्रति 2 ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

(स) आलू की फसल के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

भारत में आलू उगाई जाने वाली एक महत्त्वपूर्ण सब्जी की फसल है। आलू का लगभग सभी परिवारों में किसी न किसी रूप में इस्तेमाल किया जाता है। आलू कम समय में पैदा होने वाली फसल है। इसमें स्टार्च, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन विटामिन सी व खनिज लवण काफी मात्रा में होने के कारण इसे कुपोषण की समस्या के समाधान का एक अच्छा साधन माना जाता है। वातावरण में अधिक नमी और मैदानी इलाकों व क्षेत्रों में जलवायु अनुकूल होने के कारण आलू की फसल को कीटों से प्रति वर्ष नुकसान होता है। ऐसे में फसल में कीटों के प्रकोप का उपचार समय रहते ठीक कर देने में ही किसानों की भलाई है। कीटों के प्रकोप से आलू की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार

मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। आलू की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों का समेकित प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

1. माँहू: आलू की फसल जब 50–60 दिन की हो जाती है उस समय इस कीट का प्रकोप अधिक होता है। यह कीट प्रायः पीले या हरे रंग का छोटे आकार वाला होता है। इस कीट के प्रौढ़ तथा शिशु झुण्ड में पत्तियों व डंठलों पर रहकर रस चूसकर फसल को हानि पहुँचाते हैं। हरे रंग के माहूँ कीट को माइजस परसिकी तथा पीले रंग के माँहू को एपिस गासिपी कहते हैं। ये मुख्यतः विषाणु रोग के वाहक होते हैं। इनके प्रकोप से पौधे रोगी हो जाते हैं तथा विषाणु कंदों तक पहुँच जाते है। इस कीट के प्रकोप से पौधे की वृद्धि रूक जाती है तथा कन्द का आकार छोटा रह जाता है।

समेकित प्रबंधन:

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- इस कीट के नियंत्रण हेतु डाइमेथियोएट 30 ई0सी0 की 1.5 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. की 8 मिली० प्रति 15 लीटर पानी या लेम्डासाइहैलोथ्रिन 2.5 प्रतिशत ई०सी0 1 मिली० प्रति लीटर पानी की दर से प्रयोग करनी चाहिए।

2. आलू का कंद शलभ: इस कीट की मादा आलू की पत्तियों, जमीन में पौधे के पास या आलू की आँखों पर अण्डे देती है, जिससे सूंड़ी निकलकर पत्तियों को खा जाती है। यह सूंड़ी आलू के कंदों में सुरंग बनाकर खाती है तथा कंदों के माध्यम से भण्डार गृह तक पहुँच जाती है। इस कीट का जीवन.चक्र 25–30 दिन में पूरा हो जाता है। ठण्डे मौसम में इसकी संख्या कम होती है जबकि 30 डिग्री सेल्सियस तापमान इनकी संख्या बढ़ोत्तरी के लिए उपयुक्त रहता है। इस कीट का एक वर्ष में 10–12 जीवन चक्र होता है।

समेकित प्रबंधन:

- इस कीट के नियंत्रण हेतु खेत की ग्रीष्मकालीन जुताई करना चाहिए तथा खेत को खरपतवारों से मुक्त रखते हुए खेत में पड़े आलू के कंदो को एकत्र कर निकाल दिया जाता है।
- सेक्स फेरोमोन्स तथा चिपकने वाले ट्रैप लगाकर नर पतंगों को पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- समय से आलू की गुड़ाई कर मेंडी चढ़ा देनी चाहिए जिससे बहर निकले हुए आलू ढक जाय।
- कीट का प्रकोप अधिक होने पर लेम्डासाइहैलोथ्रिन 2.5 प्रतिशत ई० सी० 500 मिली० प्रति हेक्टेयर या मेथोक्सीफेनोजाइड 240 एस० सी0 600 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

3. कर्तन कीट: यह कीट दिन में ढेलों व मिट्टी में छिपे रहते हैं और रात में भोजन की तलाश में निकलकर पौधों को खाकर हानि पहुँचाते हैं। इसकी हानिकारक अवस्था सूंड़ी होती है। यह पौधे व शाखाओं को काटकर गिरा देता है। इसका प्रकोप कंद में भी होता है।

समेकित प्रबंधन:

- इस कीट के नियंत्रण हेतु खेत में जगह–जगह घास–फूस का ढेर बनाकर सुबह के समय सूंड़ियों को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिऐ।
- खेत को साफ.सुथरा रखना चाहिए।
- सूड़ियों को एकत्रकर नष्ट कर देना चाहिए।
- सिचाई करने से सूड़ियाँ बाहर आ जाती हैं जिन्हें चिड़ियों द्वारा खाकर नष्ट कर दिया जाता है।

- कोराजन 20 एस0 सी0 300 मिली० प्रति हेक्टेयर या इन्दाक्साकार्ब ३० डब्ल्यू० जी० 130 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करने से कीट का नियंत्रण हो जाता है।

(द) मिर्च की फसल के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

मिर्च (कैप्सिकम एनम, कुल–सोलेनेसी) एक गर्म मौसम का मसाला है जिसके आभाव में कोई सब्जी कितनी ही मेहनत से तैयार किया गयी हो, फीकी होती है। इसका उपयोग ताजे, सूखे एवं पाउडर–तीनों रूप में किया जाता है। इसमें विटामिन ए व सी पाया जाता है। यह मुख्य रूप से तीन तरह का होता है– मसालों वाली साधारण, आचार वाली व शिमला मिर्च। इसकी कुछ प्रजातियाँ काफी तीखी व कुछ कम अथवा नहीं के बराबर होती है। नमी और मैदानी इलाकों व क्षेत्रों में जलवायु अनुकूल होने के मिर्च की फसल को कीटों से प्रति वर्ष नुकसान होता है। कीटों के प्रकोप से मिर्च की फसल की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। मिर्च की फसल में लगने वाले प्रमुख कीटों का समेकित प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

1. थ्रिप्स: इस कीट के शिशु व् वयस्क दोनों पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। इसके प्रकोप से पत्तियां ऊपर की ओर मुड़कर सूख जाती हैं जिससे कारण पैदावार प्रभावित होती है। यह कीट मोजेक रोग का वाहक भी है।

समेकित प्रबन्धन:

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्ल्यू० एस० 2.5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से शोधन करके पौधशाला में बुआई करना चाहिए।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के.ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए ।अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- कीटनाशी रसायनों जैसे– इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 3 मिली प्रति 10 ली. पानी या इथोफेनप्राक्स 10 प्रति ई0 सी0 1.25 मिली प्रति ली0 पानी या बूफ्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0 पी0 1 मिली0 प्रति ली पानी या लैम्डासाईहैलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 1 मिली प्रति 2 ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

2. पीली माईट: यह कीट पीले रंग कीट होता है, पीठ पर सफेद धारियां पाई जाती हैं। यह कीट आसानी से दिखाई नहीं देती है ।इसका प्रकोप होने पर पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ जाती है तथा देखने में सिकुड़ी लगती है। इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं।

समेकित प्रबन्धन:

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- माईट का प्रकोप होने पर सल्फर धूल 10 प्रतिशत की 20–25 किग्रा. प्रति हे. की दर से भुरकाव करना चाहिए या घुलनशील सल्फर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपारगाईट 57प्रतिशत ई० सी० 3.5 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।